

# हिन्दी में आका लोक साहित्य का अध्ययन: संभावना एवं चुनौतियाँ

## सुश्री संतिमो निमासो

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

### Abstract

अरुणाचल प्रदेश एक जनजातियाँ प्रदेश है। यहाँ छब्बीस जनजातियाँ और सौ से भी अधिक उप-जनजातियों का निवास है। जैसे- आका, आदी, अपातानी, गालों, खामती, तागिन, तांगसा, नोकते, न्यीशी, मिशामी, मोन्पा, शेरदुकपन आदि। प्रत्येक जनजातियों के अपनी भिन्न परंपरा, संस्कृति, लोक विश्वास, प्रथा, वेशभूषा तथा बोलियाँ हैं। इन्ही माध्यमों से उनकी पहचान झलकती है। सभी जनजातियाँ एक दूसरी से भिन्न होने के बावजूद उन्में एक समानता देखी जाती है वह है उनके कृषि जीवन। अतः भौगोलिक रूप से पहाड़ी प्रदेश होने के कारण कुछ समुदायों को छोड़कर अधिकतर जनजाति झूम खेती करते हैं। आका जनजाति अरुणाचल प्रदेश के छब्बीस जनजातियों में एक है। आका समाज में लोक साहित्य प्रचुर मात्र में पाई जाती है। बहुरंगी संस्कृति तथा समृद्ध परंपराओं एवं प्राकृतिक सुषमाओं से सम्पन्न आका समाज की लोक साहित्य भी उन्नत और व्यापक है। लिपि के अभाव में आका लोक साहित्य मौखिक परंपरा में ही रक्षित है। आका लोक साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की कोई व्यवस्था नहीं है इसलिए आका लोक साहित्य के प्रति लोगों की रुचि घट रही है। अरुणाचल प्रदेश की राजभाषा अंग्रेजी है तथा हिन्दी संपर्कभाषा है। आका समाज की युवा पीढ़ी में भी अंग्रेजी और हिन्दी सीखने की होड़ बढ़ी है। ऐसे में आका लोक साहित्य के सामने इसके लुप्त होने का खतरा बढ़ गया है। इसलिए आका लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं को संग्रहीत करने के साथ-साथ देवनागरी लिपि में प्रलेखीकरण करना अति आवश्यक है। ऐसे करने पर आका लोक साहित्य के माध्यम से आका जनजाति के समाज एवं संस्कृति को जानने का विशेष अवसर प्राप्त होगा। साथ ही अन्य जनजातियों के लोकसाहित्य की भाँति आका लोकसाहित्य का भी अन्य लोक साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होगा।

अरुणाचल प्रदेश एक जनजातियाँ प्रदेश है। यहाँ छब्बीस जनजातियाँ और सौ से भी अधिक उप-जनजातियों का निवास है। जैसे- आका, आदी, अपातानी, गालों, खामती, तागिन, तांगसा, नोकते, न्यीशी, मिशामी, मोन्पा, शेरदुकपन आदि। प्रत्येक जनजातियों के अपनी भिन्न परंपरा, संस्कृति, लोक विश्वास, प्रथा, वेशभूषा तथा बोलियाँ हैं। इन्ही माध्यमों से उनकी पहचान झलकती है। सभी जनजातियाँ एक दूसरी से भिन्न होने के बावजूद उन्में एक समानता देखी जाती है वह है उनके कृषि जीवन। अतः भौगोलिक रूप से पहाड़ी प्रदेश होने के कारण कुछ समुदायों को छोड़कर अधिकतर जनजाति झूम खेती करते हैं।

आका जनजाति अरुणाचल प्रदेश के छब्बीस जनजातियों में एक है। आका एक असमिया शब्द है। आका का अर्थ 'चित्रित' होता है। आका जनजाति के लोग शरीर में गोदना करते हैं। संभवतः शरीर में गोदने को देखकर ही यह नाम दिया गया होगा। गिबजी निमचो ने अपने ग्रंथ 'द आकाज लैण्ड एण्ड पीपल' की भूमिका में लिखा है- "In fact, the name Aka has been given by the people of the plains in Assam, which means painted". इस समुदाय के लोग मुख्य रूप से प्रदेश के पश्चिम कामेंग, पूर्वी कामेंग, बीचोम आदि जिलों में रहते हैं। आका जनजाति की दो उपजनजातियाँ हैं- हुस्सो-आका और कोरो-आका। हुस्सो-आका पश्चिम कामेंग तथा कोरो-आका बीचोम और पूर्वी कामेंग जिलों में निवास करती है। ये मुख्य रूप से झूम खेती करते हैं। इनका मुख्य फसल मक्का है। ये बाजरा और धान की भी खेती करते हैं। आवश्यकता की सज्जियाँ ये अपने खेतों में उगाते हैं। प्राचीन समय से आका जनजाति ने अपने परंपरागत रूप को सँजोये रखते आये हैं। ये हस्तशिल्प कला में भी अत्यंत निपुण हैं। वे बांस और बेंत से कई प्रकार के उपयोगी वस्तुएँ अपने घरों और व्यवसाय के लिए बनाते हैं। यहाँ के लोग प्राचीन काल से ही प्रकृति से संबंध रखते आए हैं। वे अपने खान-पान, रहन-सहन सब कुछ प्रकृति पर निर्भर होते हैं। इसलिए वे सबसे प्रथम स्थान और सम्मान प्रकृति को देते हैं। वे प्रकृति को ही अपना परमात्मा के रूप में स्वीकार किया है और प्रकृति को ही पूजते हैं।

आका समाज में लोक साहित्य प्रचुर मात्र में पाई जाती है। बहुरंगी संस्कृति तथा समृद्ध परंपराओं एवं प्राकृतिक सुषमाओं से सम्पन्न आका समाज की लोक साहित्य भी उन्नत और व्यापक है। अरुणाचल के अन्य जनजातियों की भाँति आका लोक साहित्य में भी लोक नाट्य का अभाव है। आका लोक साहित्य के अंतर्गत लोकगीत, लोक कथाएँ, लोक सुभाषित और कुछ लोक गाथाएँ भी प्राप्त होती है। आका लोक साहित्य में सृष्टि की उत्पत्ति, रीति-रिवाज, गाँव, पहाड़, कुल, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, भाई-बहन के संबंध, भूत-प्रेत के प्रसंग आदि का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। उदाहरण स्वरूप 'न्येबिनसा ई आद्रावाना' नामक लोक गीत को देख सकते हैं-

न्येबिनसा ई आद्रावाना वाह वाह

जो न्येबी पूयउ पूजऊ त्रालया

से यो मो बामे जे

न्येबिनसा ई अद्रवोना

डुड्रासेये आद्रावाना वा वा

जो ब्रोको बोयों पूजऊ त्रालया

से यो मो बामेजे

डॉनड्रासेये अद्रोवोना

प्रस्तुत लोकगीत में आका जनजातिय के विभिन्न गाँवों और कुलों का वर्णन करते हुए उन बस्तियों में स्थित विविध पहाड़ों में निवास करने वाले कुलों का वर्णन किया गया है। इस प्रकार के लोक गीतों में आका समाज के साथ-साथ वहाँ के भौगोलिक दृश्य की भी जानकारी प्राप्त होती है। ऐसी ही 'तूमो खौ' नामक एक लोक कथा में सृष्टि पर नफरत और हिंसा की शुरुआत के संबंध में भी वर्णन प्राप्त होता है। इस लोक कथा के अनुसार संसार के रचनाकार 'बुसलौ आऊ' है। उनका बेटा 'ठुमगौ उबरौ' पूरे संसार की देख-रेख करता है। इस प्रकार की लोककथाओं में मनोरंजन के साथ-साथ समाज विशेष की परंपरा, संस्कृति, मान्यताएँ, जीवन मूल्य इत्यादि की झलकियाँ भी प्राप्त होती है। आका समाज में भी लोक सुभाषितों की कोई कमी नहीं है। वे अपने दैनिक जीवन में कई लोकसुभाषितों का प्रयोग करते आए हैं जो उनके कथन को और विशिष्ट बना देती है। उदाहरण स्वरूप- 'विनकोसा मीमसा आ इखेश्री बीलई-बीलई खा वॉदों, से हान्या?' अर्थात् खेत के मध्य में एक लड़की खड़ी है जिनके बाल बहुत रेशमी है, वह क्या है? इसका उत्तर है मक्का। इस प्रकार के लोकसुभाषितों के प्रयोग से आका भाषा के शिल्पगत सौन्दर्य का परिचय मिलता है।

अरुणाचल प्रदेश के आका जनजाति के पास समृद्ध लोक साहित्य उपलब्ध है। लोक में उपलब्ध इन सांस्कृतिक धरोहरों को एक पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी को विरासत के रूप हस्तांतरित कर देती है। लिपि के अभाव में आका लोक साहित्य मौखिक परंपरा में ही रक्षित है। आका लोक साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की कोई व्यवस्था नहीं है इसलिए आका लोक साहित्य के प्रति लोगों की रुचि घट रही है। अरुणाचल प्रदेश की राजभाषा अंग्रेजी है तथा हिन्दी संपर्कभाषा है। आका समाज की युवा पीढ़ी में भी अंग्रेजी और हिन्दी सीखने की होड़ बढ़ी है। आका गाँवों का शहरीकरण तथा बड़ी संख्या में लोगों का गाँवों से पलायन भाषा संकट की स्थिति पैदा कर रही है। आका लोक साहित्य की एक अन्य समस्या उसकी मौखिक रूप में उपलब्धता है। ऐसे में आका लोक साहित्य के सामने इसके लुप्त होने का खतरा बढ़ गया है। इसलिए आका लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं को संग्रहीत करने के साथ-साथ देवनागरी लिपि में प्रलेखीकरण करना अति आवश्यक है। ऐसे करने पर आका लोक साहित्य के माध्यम से आका जनजाति के समाज एवं संस्कृति को जानने का विशेष अवसर प्राप्त होगा।

समाज में बढ़ती आधुनिकीकरण के कारण लोगों का झुकाव आधुनिक जीवन शैली की ओर बढ़ने लगा जिसके चलते युवा वर्ग अपनी परंपराओं, रीति-रिवाज, पूर्वजों के सांस्कृतिक धरोहर, लोक विश्वासों तथा अपनी मातृभाषा को धीरे-धीरे भूल रहे हैं जो कि आका लोक साहित्य के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। गाँव के बुजुर्गों और जानकार लोगों की संख्या घटने के कारण आका लोक साहित्य लुप्त होने की कगार पर हैं। विलुप्ति के मुहाने पर खड़ी आका भाषा और इसके लोक साहित्य को समय रहते विभिन्न संस्थाओं द्वारा संग्रहीत करके लिपिबद्ध करना अती आवश्यक है। अरुणाचल प्रदेश की कई जनजातियों के लोक साहित्य पर शोध हो चुके है या हो रहे हैं किन्तु शोधार्थी की जानकारी में आका जनजाति की लोक साहित्य पर हिन्दी में अबतक कोई शोध कार्य नहीं हुआ। आका लोक साहित्य का अध्ययन करने से उसमें निहित समाज और सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को जानने और समझने का विशेष अवसर प्राप्त होगा और अन्य जनजातियों के लोकसाहित्य की भाँति आका लोकसाहित्य का भी अन्य लोक

साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होगा। संस्कृति मानव जीवन की पहचान है। इसके द्वारा मनुष्य के व्यवहार, कार्यकलाप, विचार, विश्वास, मान्यताएँ आदि पहचानी जाती है। जिस प्रकार लोक संस्कृति का जन्म मानव समाज से होता है उसी प्रकार लोक साहित्य का जन्म लोक-संस्कृति से होता है। किसी भी समाज की संस्कृति उनकी अपनी लोक साहित्य में उपलब्ध विभिन्न विधाओं से समझा जा सकता है। इसलिए आका समाज के विभिन्न पक्षों को समझने के लिए इस समाज में उपलब्ध लोक साहित्य का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

#### निष्कर्षतः

इस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है इसलिए किसी भी समाज के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए वहाँ के साहित्य को जानना-समझना आवश्यक होता है। जिस समाज के पास लिखित साहित्य नहीं होता, वहाँ लोक साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में अध्ययन किया जाता है। सामान्य रूप से लोक साहित्य मौखिक ही रहता है जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी वीरासत के रूप में प्राप्त होते हैं। आज लोक साहित्य के संकलन तथा प्रलेखीकरण करने की व्यग्रता एवं रूचि लोगों में बढ़ने के कारण यह मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में भी उपलब्ध होने लगी है। समाज विशेष में रहने वाले लोग जैसा सोचता है और जो करता है उसका वर्णन लोक साहित्य में मिलता है। जिस समाज के पास लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है वहाँ लोक साहित्य के माध्यम से ही उस समाज विशेष का इतिहास, आर्थिक जीवन तथा राजनीतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक -परिप्रेक्ष्य को सरलतम रूप से समझ सकते हैं। अतः आका जनजाति के लोक साहित्य का हिन्दी में अध्ययन करना एक महत्वपूर्ण कड़ी होगी।

#### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, 'लोक साहित्य की भूमिका', साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड ज़ीरो रोड, इलाहाबाद
2. कृष्णदेव उपाध्याय, 'लोक संस्कृति की रूपरेखा', लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019
3. Nimachow, G. 'The Akas Land and People', Commonwealth Publishers Private Limited, New Delhi, First edition, 2011.
4. Sinha, R. 'The Akas', Dr. P,C, Dutta, Director of research, Itanagar, 1962
5. M.L. Bose, 'History of Arunachal Pradesh', Concept Publishing Company, New Delhi, 1997
6. Elwin, V. "Myths of the North-East Frontier of India", Research Publication, Shillong, 1968.